फरीदाबाद
मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 134 | अगस्त 1999

कहते हैं आजाद हो

एस.पी.एल. मजदूर : "फैक्ट्री सातों दिन चलती है। दो ही शिफ्ट हैं — 12-12 घन्टे की। कहने को 4 घन्टे ओवर टाइम है पर सिंगल रेट से पैसे देते हैं। हर रोज़ यह 4 घन्टे करना कम्पल्सरी है। रोज 12 घन्टे ड्युटी करने से परेशानी बहुत होती है। छुट्टी करने पर सुपरवाइजर उल्टा-सीधा बोलते हैं। कैजुअल वरकरों को तो साप्ताहिक छुट्टी भी नहीं देते। निकालने में दो मिनट लगाते हैं। बीमार होने पर ई.एस.आई. छुट्टी ले ली तो कुछ दिन बाद किसी न किसी बहाने से निकाल देते हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "काम का बोझ बहुत ज्यादा बढा दिया है। सुबह 8 से शाम 4.30 तक लगातार लगे रहें तब बड़ी मुश्किल से प्रोडक्शन निकलती है। शरीर दर्द करता है। पँसलियों के नीचे दर्द हो रहा है — सुबह फिर वही मशीन चलानी है। बोलो तो सस्पेन्ड। एक वरकर ने एक लीडर से यह ही कहा कि इस मशीन पर इतनी जॉब नहीं बन सकती। लीडर बोला कि बन सकती हैं। तब वरकर ने कहा कि एक-दो दिन बना कर दिखाओ। इस पर लीडर गरम हो गया। मैनेजमेन्ट ने उस वरकर को सस्पेन्ड कर दिया।"

एक ट्रेनी : "विभिन्न डिग्रियों के लिये शर्त पूरी करने 700 छात्र-छात्रायें **रैनबेक्सी फार्मास्युटिकल्स** में ट्रेनी हैं। ट्रेनिंग के नाम पर हम से फ्री में काम लेते हैं। फैक्ट्री चारों ओर से बिलकुल बन्द है, बाहर से आवाज भी अन्दर नहीं आती। ऐसा घुटन-भरा माहौल बना रखा है कि बैठे-बैठे ही दिमाग खराब हो जाये। कॉफी की मशीन और चाय बगल में हैं — चाय-वाय के लिये भी ढाई मिनट से ज्यादा ब्रेक नहीं ले सकते। सभी दीवारें शीशे की हैं ताकि अफसर हर समय निगाह रख सकें।"

सत्य भावा मजदूर : "जनवरी से आया डी.ए. का 172 रुपया अभी तक नहीं दिया है। माँगने पर मैनेजमेन्ट कहती है कि फैक्ट्री बन्द कर दूँगी। फैक्ट्री में ना पीने का पानी है और ना लैट्रिन है। इनके लिये बाहर जाना पड़ता है। इनमें समय लगता है और मैनेजमेन्ट झाड़ती है। यह सब बातें कहने पर मैनेजमेन्ट कहती है कि निकाल दूँगी। दस साल से काम कर रहे वरकर को किसी प्रकार की परेशानी होती है तो मैनेजमेन्ट सुनती ही नहीं, सहायता करना तो दूर रहा। ज्यादा कहने पर गेट बन्द हो जाता है।"

आयशर ट्रैक्टर वरकर : "मैनेजमेन्ट ने मैनपावर बहुत कम कर दी है। अत्याधिक काम की वजह से हमारे शरीर बेहाल हैं। दो साल से हम कह रहे हैं कि डॉक्टर बुला कर मेडिकल करवाओ पर मैनेजमेन्ट यह करती ही नहीं। मशीन शॉप वरकरों पर तीन जगह का वर्क लोड लाद दिया है — यहाँ का, भोपाल का और एक्सपोर्ट का मैटेरियल बनाना पड़ता है। तीस साल सर्विस वाले मजदूरों से रेहड़ी खींचने को कहती है आयशर मैनेजमेन्ट।"

पूनम फोरजिंग मजदूर : "ड्युटी कभी 12 घन्टे तो कभी 16 घन्टे। ओवर टाइम सिंगल रेट से। तनखा 1300 रुपये महीना। काम खूब लेते हैं। न ई.एस.आई. कार्ड है, न फन्ड है। चमचागिरी ऊपर से। कुछ बोलने पर नौकरी से निकलो।"

गँगा-रीटा-शोभा

पहली मेमसाब : "यह जो गँगा है न, इसे देखते ही इसके मुँह पर थप्पड़ मारने को मन करता है।"

दूसरी मेमसाब : "हाँ, बहुत खराब है। मैंने शोभा को मना किया हुआ है, गँगा से नहीं मिलना।"

पहली मेमसाब : "सन्डे को रीटा आती ही नहीं। कहती है कि हफ्ते में एक दिन की छुट्टी चाहिये। यह उसे गँगा ने सिखाया है। सन्डे को अटेन्डेन्ट भय्या को ही जरूरी बर्तन-वर्तन भी करने पड़ते हैं।"

दूसरी मेमसाब : "शोभा तो हर रोज आती है। मैं रीटा को भी समझा दूँगी।"

गँगा-रीटा-शोभा बँगलों में झाड़ू-पोचा, कपड़े धोना, बतर्न माँजने का काम करती हैं। बर्तन तो सुबह और शाम, दो टाइम साफ करने पड़ते हैं। महीने के तीन-चार सौ रुपये गँगा-रीटा-शोभा को दिये जाते हैं।

गुडईयर वरकर : "मैनेजमेन्ट जरा सी बात पर मजदूरों को बाहर कर देती है। बहुत सख्ती कर रही है। बुरा हाल कर रखा है।"

इनके कानून, इनके अमल

आटोपिन मजदूर : "परमानेन्ट को मई का वेतन पहली जुलाई को जा कर दिया और कैजुअल वरकरों को मई का वेतन आज, 10 जुलाई तक नहीं दिया है।"

जे.एम.ए. वरकर : "7 से पहले की बजाय तनखा 15 तारीख के बाद देते हैं। रॉ मैटेरियल नहीं होने, काम नहीं होने पर भी मैनेजमेन्ट कहती है कि अपना प्रोडक्शन लिखो।"

बरसत उद्योग मजदूर : "1200 रुपये महीना तनखा देते थे। बहुत कहा-सुनी की तब अब जा कर 1300 रुपये किये हैं।"

भारत मशीन टूल्स वरकर : "जून-दिसम्बर 98 के मँहगाई भत्ते के 172 रुपये जो जनवरी में आये थे वे मैनेजमेन्ट नहीं दे रही है।"

ग्लोब कैपेसिटर मजदूर : "नये वरकरों को 1500 रुपये ही वेतन में देते हैं।"

सुपर ऑयल सील मजदूर : "मई का वेतन 5 जुलाई को जा कर दिया। डेढ साल का बोनस नहीं दिया है।"

अम्बिका इन्डस्ट्रीज वरकर : "हैल्परों को 1050 रुपये तनखा देते हैं।"

बॉकमैन मजदूर : "फैक्ट्री में बहुत ठेकेदारी है। ज्यादातर हैल्परों को 1200-1300 रुपये महीना वेतन देते हैं। तनखा 7 से पहले देने की बजाय 20 तारीख के आस-पास देते हैं।"

पोलर फैन वरकर : "ठेकेदार टाइम पर तनखा नहीं देते। महीने के 1200 रुपये ही देते हैं और ऊपर से दिहाड़ियों में गड़बड़ करते हैं। हर महीने मारामारी की नौबत आ जाती है।"

हरियाणा गैरेज मजदूर : "1200 रुपये वेतन देते हैं। ड्युटी 12 घन्टे की है। ओवर टाइम सिंगल रेट से।"

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कारगिल और मजदूर

राउरकेला स्टील प्लान्ट मजदूर : "जून में मैनेजमेन्ट ने मनमाने ढँग से हर मजदूर के वेतन में से सौ- सौ रुपये कारगिल फन्ड के लिये काट लिये थे। कहने को सरक्युलर लगाया था जिसे बहुत से मजदूरों ने देखा तक नहीं और फिर उसमें लिखा था कि जो नहीं देना चाहते हैं वे लिख कर दें अन्यथा मान लिया जायेगा कि सौ रुपये देना स्वीकार्य है। जुलाई में फिर मैनेजमेन्ट ने सरक्युलर लगाया कि कारगिल फन्ड के लिये हर वरकर का एक दिन का वेतन काटा जायेगा तथा जो यह नहीं देना चाहते वे लिखित में दें अन्यथा माना जायेगा कि पैसे देना उन्हें स्वीकार्य है। यह सरक्युलर भी काफी वरकरों ने देखा तक नहीं और जिन वरकरों ने देखा तथा पैसे नहीं काटने की बात लिख कर मैनेजमेन्ट को देने गये उनके पत्र मैनेजमेन्ट ने लेने से ही इनकार कर दिया। इस प्रकार निरंकुश ढँग से राउरकेला स्टील प्लान्ट में मैनेजमेन्ट ने मजदूरों से कारगिल फन्ड वसूला।"

रेलवे वरकर : "जून का वेतन देने से पहले हमारे यहाँ नोटिस लगा कि एक दिन का वेतन कारगिल फन्ड के लिये काटा जायेगा और कि जो नहीं देना चाहते हैं वे लिख कर के दें। अब ऐसे में लिख कर देना तो रेल के आगे कूद कर आत्महत्या करना है। अपने मन से तो एक दिन का वेतन इक्का- दुक्का ही देता, नोटिस लगा कर सब वरकरों के एक दिन के पैसे कारगिल फन्ड के लिये काट लिये गये।"

ई.एस.आई. वरकर : "जून का वेतन देने के समय हैड आफिस से कैशियरों के पास निर्देश आया कि प्रत्येक के वेतन में से एक दिन के पैसे कारगिल फन्ड के लिये काट लिये जायें और जो मना करे उसे लिख कर देने को कहा जाये। यह सरासर जबरदस्ती हुई, हमारी इच्छा - अनिच्छा की तो यहाँ कोई बात ही नहीं थी।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "कारगिल के नाम पर एक दिन की दिहाड़ी काटने की बात कारपोरेट आफिस से आई थी। सब प्लान्टों में नोटिस लगे थे। लेकिन फस्ट, सैकेन्ड, थर्ड और फार्मट्रैक के हजारों मजदूरों ने जब लिख कर दे दिया कि मैनेजमेन्ट हमारे पैसे नहीं काटे तब मैनेजमेन्ट ने अन्य प्लान्टों में भी कारगिल फन्ड के लिये पैसे नहीं काटे।"

कारगिल और बादल

(इन्टरनेट से प्राप्त कहानी का हिन्दी अनुवाद)

मेज पर मेरा भोजन तैयार है। कल रात बनाई रोहू मछली तथा अब पकाया चावल। मुझे मेरा भाई याद आ रहा है, मेरे चाचा का लड़का। वह अब फौज में है। काफी समय से मेरा उससे कोई सम्पर्क नहीं है।

तब वह बहुत छोटा था। उसने स्कूल जाना शुरू ही किया था। जब वह खाता था तब हर कोई उसकी तरफ देखता था। वह बहुत खाता था। हर समय भूखा रहता था। किसी को कोई चीज खाते देखता तब उसकी आँखें बाहर को निकल आती और मुँह से लार टपकने लगती। चाची उसे डाँटती और कान पकड़ कर कहती कि यह कुत्ता किसी को खाने नहीं देता। "जाओ यहाँ से। जाओ! पौधों को पानी दो या पढो।" वह रोने लगता और चला जाता।

पन्द्रह सदस्यों का हमारा संयुक्त परिवार था। दूर एक छोटे शहर में नौकरी करते मेरे पिता के अलावा हम सब गाँव में रहते थे। मेरे पिताजी परिवार के एकमात्र कमाने वाले सदस्य थे। खाने के लिये हमारे पास भोजन ज्यादा नहीं होता था। नन्हें बादल के साथ एक थाली में खाने की इच्छा किसी की नहीं होती थी। वह सब कुछ खा जाता!

हम सब इकट्ठे बड़े हुये। विद्यालय की पढाई पूरी करने तक हमने उस बड़े संयुक्त परिवार में गरीबी को आपस में बाँटा। मैंने राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त की। मेरे पिताजी मुझ में सुनहरा भविष्य देखने लगे और चाहने लगे कि मैं शहर में पढ़ूँ। हम शहर आ गये और चाचा- चाचियों, चचेरे भाई- बहनों को पीछे गाँव में छोड़ आये। मेरे ज्येष्ठ चचेरे भाई को तब तक अध्यापक की नौकरी मिल गई थी। गाँव में हमारे धान के चन्द छोटे- छोटे खेत हैं। मेरे ज्येष्ठ चाचा धान के खेतों की देखभाल करते हैं। मेरे चाचा और भाई खेतों में काम करते हैं तथा घर के छोटे- से अहाते में सब्जियाँ उगाते हैं। फसल साल- भर नहीं चलती और सब्जियाँ कभी भी पर्याप्त नहीं होती। मेरे भाई अक्सर मछलियाँ पकड़ते हैं और मेरी चाचियाँ वर्षा ऋतु में केकड़ों के लिये जाल बिछाती हैं। चूँकि मेरे पिता को शहर में परिवार चलाना पड़ता, उनकी स्थिति पहले जितने पैसे भेजने की नहीं रही। वर्ष में एक बार वे पूरे परिवार के लिये कपड़े भेजते।

जब भी हम गाँव जाते या गाँव से कोई आता, हम बहुत चीजों के बारे में बातें करते : धान के खेत, सब्जियाँ, एक- दूसरे के विद्यालय, अर्ध- वार्षिक परीक्षाओं में नम्बर, वार्षिक परीक्षायें तथा कई अन्य चीजों के बारे में। लेकिन हम जब भी बादल की बात करते, हर बार वही पुरानी कहानी होती : आजकल वह घोड़े की तरह खा रहा है। उसका भोजन तीन या चार लोगों के भोजन के बराबर है। कोई भी उसका पेट नहीं भर सकता! हर कोई हँसता, बादल भी हँसता। जब वह बारह साल का भी नहीं था तब मैंने उसे देखा है। वह एक तन्दरुस्त लड़के की तरह बड़ा हो रहा था। थकावट का कोई चिन्ह प्रदर्शित किये बिना घन्टों उसका धूप में काम करना मेरी आँखों के लिये भी अविश्वसनीय था। बालपन में भी उसने भोजन के बारे में कभी शिकायत नहीं की। उसके इस गुण को सब पसन्द करते।

पढाई में वह कभी भी अच्छा नहीं था। उसकी शिक्षा के बारे में कोई भी चिन्ता नहीं करता था, वह स्वयं भी नहीं करता था। दसवीं की परीक्षा में वह फेल हो गया पर दूसरे प्रयास में उत्तीर्ण हो ही गया। प्रगति और प्रौद्योगिकी के इस विश्व में वही उसका एकमात्र क्वालिफिकेशन रहा। अठारह वर्ष की आयु में लम्बा- तगड़ा जवान। अब कोई उसका पेट नहीं भर सकता। अब कोई उसका तन नहीं ढँक सकता। वह आदमी बन गया है। उसे खुद अपने रोटी- कपड़े का प्रबन्ध करना है।

उच्चतर अध्ययन को जारी रखने के लिये इस बीच मैं आई.आई.टी. बम्बई के लिये चुन लिया गया। बम्बई के लिये रवाना होने से पहले मैं अपने गाँव गया। मुझे पता चला कि किसी फैक्ट्री में काम करने बादल बम्बई चला गया था। बहुत बढिया! मैं भी वहीं हूँगा। मैंने उसका पता माँगा। लेकिन किसी को मालूम नहीं। अजीब बात है! मामला क्या है? मैंने पूछताछ की तो यह तो पक्का था कि वह एक फैक्ट्री में काम करेगा लेकिन किस फैक्ट्री में और कहाँ वह फैक्ट्री है का पता नहीं था। ठेकेदार कहता है कि लड़कों को अलग- अलग जगहों पर रखेंगे। उन्हें रहने का सही ठिकाना दे दिया जायेगा तभी पते की सूचना भेज दी जायेगी और मेरे परिवारजन मुझे खबर कर देंगे। कहानी अजूबा लगती है। मेरा एक भाई मुझे सन्तुष्ट करने का प्रयास करते हुये कहता है कि बम्बई पहुँचते ही उसे खत डालने को कहा है और पते लिखे अन्तर्देशीय पत्र उसे दिये हैं। मैंने मामले की तह में जाना चाहा तो मुझे बताया गया कि बादल ने नौकरी दूढने की जी- तोड़ कोशिश की। वह कई जगह गया पर हर जगह निराशा हाथ लगी। हताशा में उसे आशा की एक किरण नजर आई। निकट के गाँव का एक ठेकेदार बम्बई में एक फैक्ट्री में भर्ती के लिये नौजवान लड़कों की तलाश में था। बादल उसे मिलने गया। ठेकेदार ने दर्जन- भर लड़के

(बाकी पेज तीन पर)

कारगिल और बादल (पेज दो का शेष)

एकत्र किये और एक हजार रुपये प्रतिमाह के वेतन पर उन सब को बम्बई ले गया।

मुझे समझ में आ गया कि बहुत अधिक समय तक आधे - पेट रहने और अनन्त कोल्हू के बैल वाली स्थिति ने उसे इस अनिश्चित भविष्य में धकेल दिया था। अपना पता घरवालों को दे कर मैंने उन्हें यथाशीघ्र बादल तक पहुँचाने को कहा। उसका पता मुझे भेजने में भी देरी नहीं करें। बम्बई में मुझे चन्द महीने भी नहीं हुये थे कि घर से मुझे बादल के बारे में खत मिला। पत्र पढते-पढते मैं अवाक रह गया। अध-मरी हालत में बादल वापस घर पहुँच गया था। सेमेस्टर परीक्षाओं के पश्चात मैं गाँव गया और उसकी बाकी कहानी सुनी।

झोंपड़पट्टी में एक छोटा कमरा इन सब लड़कों को रहने को दिया गया। वे एक फैक्ट्री में काम करते, सुबह से रात तक लोहे की छड़ें और प्लेटें उठाते। कभी उन्हें निर्माण स्थलों पर लोहा चढाने और उतारने का काम करना पड़ता। उन्होंने ढाई महीने काम किया। पहले महीने की समाप्ति पर ठेकेदार ने उन्हें आधे महीने का वेतन ही दिया। पूरी राशि नहीं देने का कारण यह बताया कि वे भाग सकते थे। दूसरे महीने में उन्होंने ठेकेदार को देखा ही नहीं। महीने की समाप्ति पर उन्होंने मैनेजर से अपने वेतन के बारे में पूछा। उसने बताया कि उनका वेतन पहले ही ठेकेदार को दिया जा चुका था। नौजवान हक्के-बक्के रह गये। वे आतंकित हो गये। वे शहर में नये थे। वे सब लड़के गाँवों से थे। उन्होंने पहले कोई शहर नहीं देखा था। और बम्बई तो एक महानगर था। वे अपनी हालत के बारे में किसी से बात भी नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्हें हिन्दी बोलनी नहीं आती थी। वापसी के टिकट खरीदने के लिये पर्याप्त पैसे उनके पास नहीं थे। और घर दो हजार किलोमीटर दूर!

बिना पैसे और बिना टिकट के वे गाड़ी में चढ गये। उनके पास जो थोड़े से पैसे थे वे भी जल्दी ही समाप्त हो गये। खाने के लिये भोजन नहीं। टिकट चेकरों द्वारा तीन बार पकड़े गये। भुसावल में दो दिन जेल में और सिकन्दराबाद आठ दिन जेल में रखे गये। बादल जब घर पहुँचा तब पहचाना नहीं जा सकता था : शरीर पर कोई माँस नहीं, आँखें धँसी हुई, उसने अपनी जबान खो दी थी। जो बचा था वह झुका हुआ कंकाल मात्र था। धीमी आवाज में उसने फुसफुसाया था : मैंने तीन दिन से कुछ नहीं खाया है, मुझे खाने को कुछ दो।

मुझे बादल आस-पास नजर नहीं आया। उसके बारे में मैंने पता किया। मुझे बताया गया कि नजदीक के एक गाँव में उसने दर्जी की दुकान खोली है। उसे पर्याप्त काम मिल जाता है। वह इतना व्यस्त रहता है कि घर आने के लिये उसे समय नहीं मिलता।

मैं उससे मिलने गया। मिट्टी की दीवारों और छप्पर वाली कमरिया में उसकी दुकान थी। चरागाह के निकट कच्ची सड़क के किनारे वह स्थित थी। आस-पास कोई नहीं। मैंने दुकान में प्रवेश किया। वह पाँवों वाली सिलाई मशीन पर काम कर रहा था। उसे देख कर मैं मुश्किल से खुद पर नियंत्रण रख पाया। उसकी हालत अभी भी खराब थी। मेरे स्वागत में वह खड़ा हो गया। मैं यह पूछने की हिम्मत नहीं कर सका कि कैसे हो। पूरी कहानी उसके शरीर पर स्पष्ट दिखाई दे रही थी। मैंने उससे पूछा, "कितने समय काम करते हो?" देर रात तक। पर्याप्त काम है। "क्या वे भुगतान करते हैं?" मैंने पूछा। नहीं, असल में नहीं। लेकिन मैं सोचता हूँ कि धन्धा बढेगा। आस-पास एक भी दर्जी नहीं है, उसने कहा। उसकी आवाज धीमी, फिर भी विश्वसनीय थी। उसने मेरी पढाई के बारे में पूछा। हमने कुछ देर बातें की। मैंने हल्के से मजाक किया : क्या तुम अब ढेर- सारा खा रहे हो? वह हँस पड़ा। दोपहर के भोजन के लिये मैंने उसे घर चलने को कहा। उसने तब के लिये मना कर शाम को आने की बात कही। मैं चल दिया। धूप में खिले उस सुनसान और अलग-थलग स्थान पर मुझे उसकी सिलाई मशीन का शोर ही सुनाई दिया।

लगभग एक वर्ष बाद मैं फिर उससे गाँव में मिला। उसका स्वास्थ्य बेहतर दिख रहा था हालाँकि वह अपनी बेहतरीन तन्दरुस्ती में नहीं था। वह हँसमुख फिर कभी नहीं रहा। उसका चेहरा सूखा था और पीला पड़ गया था। उसने कहा कि उसे बहुत मेहनत करनी पड़ती है। दुकान खोलने के बाद से आराम नहीं मिलता। लोग बहुत कम पैसे देते हैं। मैं मुट्ठी-भर पैसे भी घर नहीं दे पाता। गुजारा करना बहुत कठिन है। वह जो पतलून पहने था उस पर मैंने काफी टाँके देखे।

बाद में मुझे पता चला कि वह फौज में भर्ती हो गया है।

मुझे उससे मिले तीन साल हो रहे हैं। एक सड़क दुर्घटना में मेरे भाई की मृत्यु के समय वह मुलाकात हुई थी। मृत्यु का समाचार मिलते ही वह घर के लिये चल दिया था। अपनी नौकरी के बारे में चर्चा करते समय उसने अप्रसन्नता व्यक्त की। फौजी कैम्प में जिस प्रकार का जीवन बिता रहा था वह उसे पसन्द नहीं था। कठिनाइयाँ जो उसे भुगतनी पड़ती थी और रुटीन अपमान जो उसे झेलनी पड़ती थी उनका विवरण देते समय कुंठाग्रस्त हो कर बोल रहा था। लेकिन युद्ध में हत्या के बारे में उसने जज्बे और उत्तेजना में बात की। अगर पाकिस्तानी हम पर हमला करते हैं तो हम उन्हें मार डालेंगे। मैंने उससे पूछा था, "वो पाकिस्तानी कौन हैं जो तुम पर हमला करते हैं? क्या वे तुम्हारी तरह के नहीं हैं जो नौकरी की तलाश में फौज में भर्ती हुये हैं? रोटी के लिये? और घर पैसे भेजने के लिये? क्या वे अपनी इच्छा से तुम पर हमला करते है? अथवा, तुम अपनी इच्छा से उन पर हमला करते हो?" वह चुप रहा। मैंने उससे कहा, "तुम्हारे भाई की मृत्यु के समाचार ने तुम्हें तोड़ दिया है और तत्काल तुम्हें कश्मीर से कटक ले आई है। क्या पाकिस्तानी सिपाहियों के अलग हृदय है?" उसने अजीब ढँग से मुझे देखा। वह एक महीने तक घर रहा। कश्मीर के लिये रवाना होने से पहले उसने मुझ से कहा, "पेन्शन के लिये अधिकृत होते ही मैं नौकरी छोड़ दूँगा। खुद मुझे किसी को मारना अच्छा नहीं लगता।"

अब मैं उसकी कमी महसूस कर रहा हूँ और उसे याद कर रहा हूँ। एक बार वह अध-मरा घर लौटा था। इस बार? मुझे नहीं मालूम। मुझे डर लगता है। युद्ध जारी है। सैंकड़ों मर रहे हैं। उन में प्रत्येक में मैं बादल देखता हूँ। वे मर रहे हैं। वे मर रहे हैं क्योंकि उनमें से अधिकतर के घर खाने को पर्याप्त भोजन नहीं था। क्या जीवन है। और अब तुम कारगिल के नाम पर मुझ से चन्दा माँगते हो? बहुत हो गया। उनके दैनिक जीवन में तुम उन्हें अपमानित करते हो और सार्वजनिक तौर पर देशभक्तों के तौर पर उनका महिमामंडन करते हो। उनकी हत्या करने के बाद तुम उन्हें फूलमालायें पहनाते हो और उन्हें शहीद करार देते हो। तुमने उनका इस्तेमाल किया है और अब भी उनका इस्तेमाल कर रहे हो। कारण क्या है? तुम झूठ बोलते हो जब तुम कहते हो कि वे पैदाइशी देशभक्त हैं और शहीद होने को प्यार करते हैं। बन्द करो इसे। मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता। उन्हें वापस घर लाओ। जीवित उन्हें वापस लाओ। मेरी मेज पर पर्याप्त भोजन है, कल रात मैंने इसे पकाया था। 8.7.1999

'मजदूर समाचार' में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, मजदूर लाइब्रेरी में आराम से बैठ कर बतायें।

अपनी बातें अन्य मजदूरों तक पहुँचाने के लिये 'मजदूर समाचार' में भी छपवाइये। आपका नाम किसी को नहीं बतायेंगे और आपके कोई पैसे खर्च नहीं होंगे।

महीने में एक बार ही 'मजदूर समाचार' छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। किसी वजह से सड़क पर आपको नहीं मिले तो 10 तारीख के बाद मजदूर लाइब्रेरी आ कर ले सकते हैं — फुरसत में कुछ गपशप भी हो जायेगी।

कह उँगली, पकड़ नाक

ओसवाल इलेक्ट्रिकल्स मजदूर : "पिछले साल यह कह कर मजदूरों की धोखे से नौकरी छुड़ाई कि फैक्ट्री को लुधियाना ले जा रहे हैं। जो थोड़े से परमानेन्ट बचे हैं उन्हें निकालने के लिये मैनेजमेन्ट अब कह रही है कि फैक्ट्री को बँगलोर ले जा रहे हैं। असल में पूरी की पूरी ठेकेदारी कर रहे हैं। अभी ही ठेकेदारों के 500 के करीब वरकर हैं जबकि परमानेन्ट मजदूर 20-22 ही बचे हैं। फैक्ट्री में काम का बोझ बहुत ज्यादा है। जबरन ओवर टाइम करवाते हैं और काम खत्म होने पर ही छोड़ते हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "एक-दो भी आई.ई. नोर्म्स के अनुसार प्रोडक्शन नहीं बढायेंगे तो पूरी डिपार्टमेन्ट के पैसे काट लिये जायेंगे की धमकियाँ दे कर मैनेजमेन्ट प्रोडक्शन बढवा रही है। दूसरी तरफ असेम्बली की एक शिफ्ट कर रखी है। कहते हैं कि सेल ही नहीं है। ट्रैक्टर इतने इकट्ठे हो गये हैं कि मैनेजरों की कारें खड़ी करने को जगह नहीं है, बाहर लॉन में ट्रैक्टर लगा दिये हैं। प्रतिदिन फार्मट्रैक में असेम्बल 60 ट्रैक्टर ही कर रहे हैं पर 104 ट्रैक्टर के हिसाब से सामान का प्रोडक्शन करवा रहे हैं। हर रोज 44 फार्मट्रैक ट्रैक्टरों का माल स्टॉक कर रहे हैं। मामला गड़बड़ है।"

नूकेम वरकर : "केमिकल प्लान्ट में 4 डिपार्ट हैं। अभी इनमें से हेक्सामीन डिपार्ट को बन्द कर रहे हैं पर यह फोरमेलडिहाइड डिपार्ट से लिन्क है। अभी हेक्सामीन के 12 वरकरों, 4 मेन्टेनैन्स वालों और 2 ड्राइवरों को निकालने की बात मैनेजमेन्ट कह रही है पर यह तो पहली किस्त मात्र है। लिखित में मैनेजमेन्ट ने छँटनी के लिये जो कारण बताये हैं वे हैं : कच्चा माल महँगा, टैक्स ज्यादा और लेबर कॉस्ट। मैनेजमेन्ट का समाधान है : बीस साल की सर्विस वाले सड़क पर जायें।"

एवरी इंडिया मज़दूर : "मैनेजमेन्ट बहुत ज्यादा परेशान कर रही है। चमचों के जरिये मजदूरों को आपस में लड़ा भी रही है। संग-संग ठेकेदारी भी बहुत बढा रही है। परमानेन्ट मजदूरों की छँटनी की तैयारी में मैनेजमेन्ट यह सब कर रही है।"

ईस्ट इंडिया कॉटन मिल वरकर : "मैनेजमेन्ट प्रचार कर रही है कि वह लीडरों की बजाय अब सीधे मजदूरों से बात करना चाहती है। लेकिन इस आड़ में मैनेजमेन्ट के दुमछल्ले मजदूरों से साइन करवा कर उस लीडर को आगे लाना चाहते हैं जिसे इमरजैन्सी हटते ही मजदूरों ने भगा दिया था। बीस साल बाद उसे फिर ला कर मजदूरों की बोटी-बोटी करने की जुगत मैनेजमेन्ट भिड़ा रही है।"

आदान-प्रदान

इन्डीकेशन मजदूर : "यूनियन में दो धड़े हैं और दोनों धड़ों के लीडरों की पीठ पर मैनेजमेनट ने हाथ रखा है। इस एग्रीमेन्ट से पहले 1500 रुपये महीना इन्सेन्टिव था। तीन साल में 1000 रुपये बढाने — 500, 250, 250 वाली एग्रीमेन्ट में 20 परसैन्ट वर्क लोड बढाया है और 1500 रुपये इन्सेन्टिव खत्म। यानि, एग्रीमेन्ट से पहले साल में 1000, दूसरे में 750, और तीसरे में 500 रुपये प्रतिमाह का नुकसान तथा 20 परसैन्ट अतिरिक्त काम का बोझ ऊपर से। पक्ष-विपक्ष के लीडर कम्पनी की मुट्ठी में हैं। ऐसे में क्या किया जाये?"

के.जी. निटिंग वरकर : "साहनी सिल्क के किसी वरकर ने आज आपसे अखबार नहीं लिया होगा क्योंकि साहनी सिल्क कम्पनी को बैंकों ने नीलाम कर दिया है। बात 5 करोड़ की थी पर 80 लाख रुपये में ही नीलाम कर दी मिली-भगत से। वरकर सब निकाल दिये।"

बाटा वरकर : "मजदूरों की बड़ी सँख्या में छँटनी करने और वर्क लोड में भारी वृद्धि के लिये मैनेजमेन्ट ने 25 फरवरी को फैक्ट्री में तालाबन्दी की थी। अपनी शर्तें थोपने के लिये मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी के पाँच महीने पूरे होने के बाद भी इसे जारी रखा हुआ है।"

कटलर हैमर मजदूर : "ट्रकों से फर्नीचर ले जा कर पूरा मैनेजमेन्ट ब्लाक खाली कर दिया। अब सिर्फ एक परसनल मैनेजर और एक कैशियर फैक्ट्री आते हैं। पता नहीं मैनेजमेन्ट क्या तिकड़म प्लान कर रही है।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "जे.सी.बी. में मैनेजमेन्ट बात-बात पर मिसबिहेव का आरोप लगा कर आजकल मजदूरों को वार्निंग लैटर थोक में दे रही है। काम बहुत-ही ज्यादा है की बात सुपरवाइजर से कहो तो उत्तर में मिसबिहेव का आरोप-पत्र पाओ।"

फ्रान्स से एक महिला मजदूर लिखती है : "इतना काम है कि मैं खत नहीं लिख पा रही हूँ। मैं अब सोचती भी नहीं हूँ। काम करती हूँ और सोती हूँ ताकि और काम कर सकूँ। फिर और काम करती हूँ और फिर सो जाती हूँ। अति हो चुकी है ....."

काम कम इसलिये कि 15 मिनट काम द्वारा हम अपनी दिहाड़ी के बराबर उत्पादन कर देते हैं। पन्द्रह मिनट काम करने के बाद हम जितना काम करते हैं वह शोषणतन्त्र और दमनतन्त्र के रखरखाव तथा विस्तार के लिये इस्तेमाल होता है। कम काम द्वारा हम शोषण व दमन पर लगाम लगाते हैं।

बातें ज्यादा इसलिये कि अपने अनुभवों व विचारों का आदान-प्रदान अधिक से अधिक कर सकें। ऐसा करके हम शोषण व दमन तन्त्रों की ईंट-गारा को हटा सकेंगे, इस व्यवस्था के नट-बोल्ट खोल सकेंगे और विकल्प को साकार कर सकेंगे।

"काम कम" वर्तमान पर ब्रेक का काम करता है और "बातें ज्यादा" विकल्प-आलटरनेटिव की बुनियाद बनाना है।

चिन्तन-मनन

सुपर स्विच मजदूर : "बिना मजदूरों द्वारा खुद कदम उठाये कहीं कुछ नहीं होगा। मजदूर अगर यह सोचते हैं कि कोई हमारी समस्याओं का समाधान कर देगा तो ऐसा होना अब मुश्किल है। कम्पनियाँ अपना बोझा मजदूरों पर डालने के लिये बिचौलियों का इस्तेमाल करती हैं। तनखा देखने में बढाई जाती हैं लेकिन वास्तव में प्रोडक्शन बढाया जाता है। उत्पादन के लिहाज से वेतन कम किये जा रहे हैं।"

एस्कोर्ट्स वरकर : "परेशान करके नौकरी छुड़वाने का मैनेजमेन्ट का प्लान है। इसलिये सिलसिलेवार परेशानी बढा रहे हैं। सैटिंग भी तुम करो, ट्राली भी तुम लाओ, 60 के बाद 65 के बाद आई.ई. नोर्म्स के बाद दो मशीन पर काम करने की बात आ गई, मेन्टेनैन्स भी करो। कहने का मतलब एक-एक करके यह थोप रहे हैं जिससे वरकरों को यह लगे कि भई इनका इरादा नौकरी नहीं करने देने का है इसलिये छोड़ो। चारों तरफ से मजदूरों को घेर रहे हैं और मामले को अरजेन्ट दिखाने के लिये 31 जुलाई तक वी.आर.एस. का टाइम रखा है। लेकिन नौकरी छोड़ कर 99 परसैन्ट बरबाद हुये हैं। परेशान करके नौकरी छुड़वाने का प्लान है इसलिये महीने-दो महीने झेल लो। यह जो टारचर कर रहे हैं उसे बरदाश्त करो को समझने वाली बात है। धीरे-धीरे हम निपट लेंगे।"

दिल्ली फोर्ज मजदूर : "मजदूर समाचार हम इकट्ठे पढते हैं। एक पढता है तथा बाकी सुनते हैं। अलग-अलग कम्पनियों की समस्याओं पर इस लिहाज से चर्चा होती है कि हमारे यहाँ यह हो तो क्या करेंगे। इन चर्चाओं से पूरी कम्पनी में बहसें हो जाती हैं और इससे बहुत फर्क पड़ता है।"

डाक पता :

मजदूर लाईब्रेरी
आटोपिन झुग्गी
एन.आई.टी. फरीदाबाद—121001

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।